पीएच०डी० शोध–प्रारूप

झारखण्ड निर्माणोत्तर काल का खोरठा पद्य साहित्य : एक अध्ययन

स्नातकोत्तर खोरठा विभाग

पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप की रूपरेखा

जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय

राँची विश्वविद्यालय, राँची

वर्ष–2024

शोध निर्देशिका

कुमारी शशि
विभागाध्यक्ष
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी

ओम प्रकाश महतो
यू०जी०सी० नेट/जे०आर०एफ०
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

झारखण्ड निर्माणोत्तर काल का खोरठा पद्य साहित्य : एक अध्ययन

प्रस्तावना :–

भारत देश का झारखण्ड राज्य जिस पर प्रकृति ने अपने सौंदर्य का खजाना जमकर बरसाया है, घने जंगल, खूबसूरत वादियाँ, जलप्रपात, कलकल बहती नदियाँ वन्य प्राणी खनिज संपदा से भरपूर और संस्कृति के धनी इस राज्य में कई जनजातीय और गैर जनजातीय समुदाय के लोग युगों से एक दूसरे के विकास में सहयोग करते हुए साथ–साथ निवास करते आ रहे है। झारखण्ड राज्य एक जनजातीय बाहुल्य राज्य है, किन्तु राज्य में निवास करने वाले गैर जनजातीय (सदान) समुदाय के लोगों के रंग–रूप, वेश–भूषा, रहन–सहन में कोई खास अन्तर नहीं मिलता है। जीवन के विविध कर्मों में परस्पर सहयोग सहकार से यहाँ एक समन्वित संस्कृति का विकास हुआ है, यह संस्कृति समतावाद, श्रमशीलता और उच्चतर सामाजिक व मानवीय मूल्यों की पृष्ठ पोषक है। सामाजिक, सांस्कृतिक एवं भाषाई क्रियाकलापों में जनजातीय एवं गैर जनजातीय समुदाय के लोग एक सूत्र में पिरोए हुए नजर आते हैं।

विशिष्ट भौगोलिक, सांस्कृतिक अस्मिता से युक्त इस झारखण्ड राज्य में पांरपरिक रूप से निवास करने वाले जनजातियों व गैर जनजातीय (सदान) समुदाय के विचार विनिमय और यहाँ कि संस्कृति को मुखरित करने के लिए साधन के रूप में सरकार से मान्यता प्राप्त 9 भाषाएँ प्रचलित है, जिनमें संताली,

मुण्डारी, हो, खड़िया और कुँडुख़ जनजातीय भाषा के अन्तर्गत आते हैं। इन्हीं 9 भाषाओं में से एक खोरठा है, जो सरकार के द्वारा मान्यता प्राप्त 4 क्षेत्रीय भाषाओं के अन्तर्गत आता है। इस भाषा को झारखण्ड का द्वितीय राज भाषा का दर्जा भी प्राप्त है।

खोरठा भाषा झारखण्ड के 16 जिलों में (रामगढ़, चतरा, हजारीबाग, कोडरमा, गिरिडीह, बोकारो, धनबाद, देवघर, पाकुड़, गोड्डा, साहेबगंज, जामताड़ा, दुमका, गढ़वा, लातेहार एवं पलामू) बोली जाती है। कुछ अनुसंधान के अनुसार इसके उपक्षेत्रों में असम, मॉरीशस, अंडमान निकोबार है, जहाँ खोरठा भाषी विस्थापित निर्वासित एवं प्रवासित होकर जीवन–यापन कर रहें हैं। भाषागत रूप से इसका सीमांकन इस प्रकार है–

उत्तर में मगही भाषी, अंगिका भाषा का क्षेत्र उत्तर–पूरब और पूरब में बंग्ला का क्षेत्र, पूरब–दक्षिण में कुरमाली का क्षेत्र, दक्षिण में कुरमाली–नागपुरी एवं पंचपरगनियाँ का क्षेत्र और दक्षिण–पश्चिम में नागपुरी का क्षेत्र तथा परवर्ती दक्षिण–पश्चिम में वर्त्तमान पलामू प्रमण्डल का क्षेत्र पड़ता है जहाँ खोरठा, नागपुरी, मगही एवं भोजपुरी का मिश्रित रूप प्रचलित है।

खोरठा मुख्य रूप से झारखण्ड के सदानों (गैर जनजातीय) की मातृभाषा है, किन्तु झारखण्ड के कई क्षेत्रों में कई जनजातीय समुदायों की भी मातृभाषा खोरठा ही है। यह भाषा जनजातीय समुदाय एवं सदानों (गैर जनजातीय) के बीच संपर्क भाषा के रूप में काम करती है। खोरठा झारखण्ड की एक स्वतंत्र

एवं समृद्ध भाषा है, साहित्य की विविध विधाओं, गद्य एवं पद्य के अन्तर्गत समाहित कहानी, कविता, गीत, निबंध, नाटक, संस्मरण, उपन्यास, लघु कथा, शब्द चित्र आदि खोरठा में लिखे गए है। झुमटा, खेमटा, घेरा, टुसु और करम पर्व के गीतों में खोरठा का लोक साहित्य सुरक्षित है।

खोरठा का लोक साहित्य अत्यंत समृद्ध है, शब्द भण्डार भरा हुआ है और यह झारखण्ड के विशाल क्षेत्र की भाषा है।

इस प्रकार हम देखते है कि क्षेत्र में खोरठा भाषा युगों–युगों से चली आ रही अतः सलिला लोक साहित्य की अजस्र धारा प्रवाहित होती आ रही है।

पद्य, साहित्य की वह विधा है, जिसमें किसी के मन के भावों को कलापूर्ण रूप से किसी भाषा के माध्यम से जाहिर किया जाता है। अर्थात् पद्य साहित्य में कवि अपने स्वरूपों को लेकर भावना व्यक्त करता है। भारत देश में पद्य साहित्य का इतिहास बहुत ही प्राचीन है। झारखण्ड के खोरठा भाषा की बात करें तो इसकी पद्य साहित्य बहुत ही समृद्ध है।

यों तो खोरठा के पद्य साहित्य का विगत सदी प्रगतिशील विचारों को ही प्रस्तुत करता आया है, पर झारखण्ड निर्माण के उपरांत नये राज्य की बदली परिस्थितियों और लेखन प्रकाशन में आयी गति में प्रगतिशीलता से ओत–प्रोत साहित्य अधिक है। झारखण्ड निर्माण के बाद सामाजिक सांस्कृतिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि में व्यापक पैमाने पर हुए परिवर्तन को खोरठा पद्य साहित्य में देखा जा सकता है। खोरठा पद्य साहित्य में वैसी रचनाओं की

संख्या कहीं अधिक है, जो झारखण्ड की मिट्टी से प्रेम दर्शाती और झारखण्डी अस्मिता को प्रतिष्ठित करती है।

खोरठा में एक से बढ़कर एक कवि है, जो अपनी रचना से खोरठा पद्य साहित्य को निरंतर आगे बढ़ाते आ रहे हैं। इस प्रकार हम पाते हैं कि खोरठा भाषा साहित्य में पद्य साहित्य को आगे बढ़ाने में खोरठा के कवि अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। उपर्युक्त खोरठा पद्य साहित्य की विकास में मैं भी अपना योगदान देना चाहता हूँ। इसलिए मैं झारखण्ड निर्माणोत्तर काल का खोरठा पद्य साहित्य : एक अध्ययन विषय पर शोध करना चाहता हूँ।

मैं अपने इस अध्ययन में इस कालावधि सन् 2000 से अद्यतन समय तक के खोरठा पद्य साहित्य के तत्वों के पड़ताल की कोशिश करूँगा।

शोध की परिकल्पना

किसी भी शोध कार्य की मुख्य बुनियाद परिकल्पना होती है। अर्थात् इसके बिना शोध कार्य करना मुश्किल है। परिकल्पना का अर्थ पूर्व चिंतन होता है। परिकल्पना से ही किसी विषय की समस्या एवं समाधान के हल के बारे में पहले से ज्ञान होता है। झारखण्ड निर्माणोत्तर काल का खोरठा पद्य साहित्य : एक अध्ययन द्वारा उनके चिंतन तथा उनके विभिन्न पक्षों को जानने एवं समझने का प्रयत्न किया जायेगा।

शोध कार्य की प्रेरणा एवं औचित्य :

झारखण्ड मेरी जन्म भूमि एवं कर्मभूमि है इसलिए बचपन से ही खोरठा भाषा के प्रति लगाव रहा है। मैंने कई खोरठा रचनाकारों की रचनाओं को पढ़ा, पढ़कर काफी प्रभावित हुआ और मुझे लगा कि अगर मुझे शोध करने का अवसर मिला तो मैं झारखण्ड निर्माणोत्तर काल का खोरठा पद्य साहित्य से संबंधित सभी रचनाओं को एक जगह संग्रहीत करने का कोशिश करूँगा, जिससे आनेवाले पीढ़ी को इस शोध कार्य के द्वारा कुछ जानकारियाँ दे सकूँ। फलतः खोरठा रचनाकारों की पद्य साहित्य की खोज के सन्दर्भ से संबंधित रचनाओं को समाज के सामने प्रस्तुत करना ही मेरे लिए बहुत बड़ी बात है, इसलिए मैंने इसी को अपना शोध विषय चुना। मेरे गुरूजनों (परम आदरणीय कुमारी शशि, डॉ० अर्चना कुमारी, दिनेश कुमार ''दिनमणि'', डॉ० निरंजन कुमार, डॉ० नकुल कुमार) एवं मित्रों ने भी इस शोध कार्य के लिए मुझे प्रेरित किया।

किसी भी शोध कार्य का महत्व तब तक नहीं होता, जब तक उसकी उपयोगिता समाज व देश के लिए न हो।

शोध प्रबंध का उद्देश्य :

किसी शोध कार्य को प्रारंभ करने के पूर्व शोध से संबंधित उद्देश्य निर्धारित की जाती है। इस शोध प्रस्ताव का निम्नांकित उद्देश्य है, प्रस्तावित काल के –

1. खोरठा भाषा एवं इससे जुड़े पद्य साहित्य का अध्ययन करना।
2. खोरठा पद्य साहित्य का विवेचन करना।
3. खोरठा प्रबंध काव्य को विश्लेषित करना।
4. खोरठा मुक्तक/स्फुट काव्य का अध्ययन करना।
5. खोरठा शिष्ट गीत साहित्य के स्वरुपों का अध्ययन करना।
6. खोरठा कविता साहित्य को विशिष्टताओं को दर्शाना।
7. खोरठा पद्य साहित्य की प्रवृत्तियाँ का विवेचन करना।

शोध का महत्व :

1. झारखण्ड निर्माण के बाद झारखण्ड की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक सांस्कृतिक स्थितियों का साहित्य में पड़े प्रभाव को समझा जा सकेगा।
2. इस अध्ययन से खोरठा साहित्य के अध्येताओं, विद्यार्थियों के लिए अपेक्षित अध्ययन सामग्री प्राप्त हो सकेगी।
3. झारखण्ड निर्माण के बाद खोरठा साहित्यकारों की विचार–दृष्टि और विधागत अभिरूचि को समझा जा सकेगा।
4. झारखण्ड निर्माण के बाद पद्य साहित्य के विकास और उसकी दशा–दिशा को जानने की विश्लेषित सामग्री प्राप्त हो सकेगी।
5. झारखण्ड निर्माण के बाद खोरठा पद्य साहित्य की चुनौतियाँ और संभावनाओं को जाना जा सकेगा।
6. किसी भाषा के विकास में पद्य साहित्य के योगदान के संदर्भ में झारखण्ड निर्माण के बाद के पद्य साहित्य की भूमिका को जानने की सामग्री प्राप्त होगी।

शोध का समाज पर प्रभाव :

1. इस शोध प्रबंध के प्रकाश में आने से समाज में बहुत सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा एवं समाज में खोरठा साहित्यकारों के प्रति गहरा सम्मान बढ़ेगा और जागृति की लहर आएगी।
2. अपनी भाषा संस्कृति के प्रति लोगों में प्रेम एवं रूझान बढ़ेगा।
3. सामाजिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक एव ंसाहित्यिक कार्य के प्रति समझदारी एवं निष्ठा का विकास होगा।
4. शोध पत्र के प्रकाश में आने पर झारखण्ड ही नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र के क्षेत्रीय भाषाओं, कला–संस्कृति के यशस्वी रचनाओं के योगदानों को प्रकाश में लाने की प्रेरणा मिलेगी।

शोध विधि :

प्रस्तावित शोध प्रबंध को पूर्ण करने के लिए निम्नांकित शोध विधियों का अनुसरण किया जायेगा–

- विश्लेषणात्मक विधि
- वर्णनात्मक विधि
- साक्षात्कार विधि
- अवलोकन विधि
- अनुसूची विधि

शोध सामग्री :

- दूरस्थ लोगों से पत्राचार
- कंप्यूटर, लैपटॉप, प्रिंटर, मोबाइल
- इन्टरनेट
- कैमरा
- टेपरिकार्डर
- टंकण मशीन
- समाचार पत्र
- पत्र–पत्रिकाओं की सूची
- पेन ड्राइव आदि।

पीएच0 डी0 शोध प्रारुप की प्रस्तावित रुपरेखा

विषय–सूची

प्रस्तावना :–

- शोध की परिकल्पना
- शोध की प्रेरणा एवं औचित्य
- शोध का उद्‌देश्य
- शोध का महत्व
- शोध का समाज पर प्रभाव
- शोध प्रविधि
- सामग्री संकलन के लिए उपयोग में आने वाले विभिन्न उपकरण

प्रथम अध्याय : झारखण्ड निर्माणोत्तर काल के खोरठा पद्य साहित्य का सामान्य परिचय

(क) पद्य साहित्य का परिचय

(ख) पद्य साहित्य की स्थिति एवं विशेषता

(ग) खोरठा पद्य साहित्य की लेखन परंपरा

द्वितीय अध्याय : झारखण्ड निर्माणोत्तर काल के खोरठा प्रबंध काव्य

(क) प्रबंध काव्य का परिचय

(ख) प्रबंध काव्य की परंपरा

(ग) खोरठा के प्रबंध काव्य

(1) महाकाव्य

(2) खण्डकाव्य

तृतीय अध्याय : झारखण्ड निर्माणोत्तर काल के खोरठा मुक्तक/स्फुट काव्य

(क) मुक्तक काव्य का परिचय एवं रूप

(ख) खोरठा मुक्तक काव्य की परंपरा

चतुर्थ अध्याय : झारखण्ड निर्माणोत्तर काल का खोरठा शिष्ट गीत के रचनाकार एवं उनकी रचनाएँ

(क) गीत का सामान्य परिचय

(ख) गीत की विशेषताएँ एवं प्रकार

(ग) खोरठा के प्रमुख गीत एवं गीतकार

पंचम अध्याय : झारखण्ड निर्माणोत्तर कालीन खोरठा के कवि एवं उनके काव्य

(क) प्रमुख कवि एवं काव्य

(ख) नवोदित कवि एवं काव्य

षष्ठ अध्याय : झारखण्ड निर्माणोत्तर कालीन खोरठा पद्य साहित्य का अध्ययन

(क) खोरठा पद्य साहित्य में भाव पक्ष का अध्ययन

- खोरठा पद्य साहित्य में रस विधान

(ख) खोरठा पद्य साहित्य में कला पक्ष का अध्ययन

- खोरठा पद्य साहित्य में छंद विधान
- खोरठा पद्य साहित्य में अलंकार विधान

सप्तम् अध्याय : पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित झारखण्ड निर्माणोत्तर काल की खोरठा पद्य रचनाएँ

(क) स्थानीय पत्र–पत्रिकाओं में

(ख) राजकीय पत्र–पत्रिकाओं में

(ग) राष्ट्रीय पत्र–पत्रिकाओं में

शोध निष्कर्ष :–

परिशिष्ट
आधार ग्रंथो ंकी सूची
संदर्भ ग्रंथो ंकी सूची
समाचार पत्रों की सूची
साक्षात्कार सूची / चित्रावली

नोट : शोध प्रारूप में आवश्यकतानुसार किंचित परिवर्तन समयानुसार किया जा सकता है।

शोध निर्देशिका

शोधार्थी

कुमारी शशि
विभागाध्यक्ष
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

ओम प्रकाश महतो
यू.जी.सी. नेट / जे.आर.एफ
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

आधार ग्रंथों की सूची

1. कुमार, डॉ० बिनोद : धोवइयाक धमक, झारखण्ड झरोखा, रातू रोड़ रांची 2022
2. कुमारी, डॉ0 अर्चना : खोरठा शिष्ट साहित्यः एक अध्ययन, प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन, राँची, 2015
3. केवट, श्याम सुन्दर : करमइति, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह बोकारो, 2006
4. 'गरीब, तारकेश्वर महतो : पारसनाथेक गोड़ा, खोरठा माँय माटी (उलगुलान) बाराडीह, बोकारो, 2019
5. पानुरी, श्रीनिवास : आँखीक गीत, पृथ्वी प्रकाशन, रोहतक रोड, न्यू दिल्ली, 2019
6. प्रबुद्ध, महेन्द्र : मानुसेक कद, उषा पब्लिशिंग हाउस, धनबाद, 2010
7. महतो, पारसनाथ : के तोज्ञ, खोरठा विकास परिषद्, ओरमांझी, राँची, 2009
8. महतो, पंचम : ककर नामे लिखल, बालीडीह खोरठा कमिटि, बालीडीह बोकारो, 2011
9. रविदास, डॉ0 मुकुन्द : कोयला आर माटी, ब्राइट एम0पी0 पब्लिशर, चाचा चौक, फरीदाबाद, हरियाणा, 2023
10. 'राज, विश्वनाथ दसौधी : पुटुस आर परास, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह, बोकरो, 2004
11. 'व्यथित, जनार्दन गोस्वामी : हिलोर, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह, बोकरो, 2001
12. शशि, कुमारी : जिनगीक डहर, यादव कम्प्यूटर्स, जीवाजीगंज, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, 2022

संदर्भ ग्रंथों की सूची

1. ओहदार, डॉ0 बी.एन. : खोरठा भाषा एवं साहित्य (उद्‌भव एवं विकास), मार्गदर्शन पब्लिकेशन, अपर बाजार, राँची, 2007
2. करमाली, फुतेश्वर : खोरठा कविता संग्रह, सहाय प्रिंटर्स बिजुलिया, रामगढ़ 2004
3. गोस्वामी, मनपूरन : खोरठा देसभगती गीत, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह बोकारो, 2006
4. झा, ए0के0 : खोरठाक काठें पइदेक खँडी, झारखण्ड झरोखा, रातू रोड, राँची, 2013
5. झा, ए0के0 : खोरठा गइद–पइद संगरह, पृथ्वी प्रकाशन, रोहतक रोड, न्यू दिल्ली, 2020
6. दिनमणि, दिनेश कुमार : सोहान लागे रे, धारा, जैना मोड़, बोकारो, 2006
7. प्रजापति, परितोश कुमार : जिनगिक भेउ, खोरठा साहित्य संस्कृति परिषद्, बोकारो, 2004
8. प्रभाकर, डॉ0 गजाधर महतो : केंवराक गमक, सफल प्रकाशन, राँची, 2023
9. प्रबुद्ध, महेन्द्र : परास के फूल, उषा पब्लिशिंग हाउस, धनबाद, 2006
10. प्रभाकर, डॉ0 गजाधर महतो : आब ना रहा पटाइल, ब्राइट एम0पी0 पब्लिशर, चाचा चौक, फरीदाबाद, हरियाणा, 2024
11. महतो, संदीप कुमार : डोंगल चेठा, ब्राइट एम0पी0 पब्लिशर, चाचा चौक, फरीदाबाद, हरियाणा, 2022
12. महतो, संदीप कुमार : आजीक गाँव, ब्राइट एम0पी0 पब्लिशर, चाचा चौक, फरीदाबाद, हरियाणा, 2022

13. महतो, संदीप कुमार : जुरगुड़ा, ब्राइट एम0पी0 पब्लिशर, चाचा चौक, फरीदाबाद, हरियाणा, 2022
14. 'व्यथित, जनार्दन गोस्वामी : चांदीक जूता, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह, बोकरो, 2002
15. 'व्यथित, जनार्दन गोस्वामी : लोर, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह, बोकरो, 2005

पत्र–पत्रिकाओं की सूची :–

1. 'आकाश खूंटी, गिरधारी गोस्वामी : लुआठी, बोकारो, 2009
2. ओहदार, डॉ० बी०एन० : करील, ओरमांझी, राँची, 2009
3. कुशवाहा, फाल्गुनी मरीक : सहिदान, गिरिडीह, 2002
4. गोस्वामी, अनिल कुमार : सहिया, बोकारो, 2002
5. दांगी, डॉ० आनन्द कुमार : खोरठा टाइम्स, चतरा, 2021
6. प्रबुद्ध, महेन्द्र : परासफुल, धनबाद, 2009
7. भारत, शांति : तितकी, बोकारो, 2017
8. महतो, संदीप कुमार : खोरठा दरपन, बोकारो, 2003

समाचार–पत्रों की सूची :–

1. आज
2. आवाज (झारखंड टाइम्स)
3. अमृतवर्षा, बोकारो
4. छोटानागपुर रश्मि, बोकारो
5. दैनिक भास्कर, राँची
6. दैनिक जागरण, राँची
7. प्रभात खबर, राँची
8. हिन्दुस्तान, राँची